पाठ 8

आप का जीवन एक ज्योति है

इस अध्याय में आप अध्ययन करेंगे

जगत की ज्योति
आपका दीपक
ईमानदार होना
परमेश्वर की सन्तान की तरह बात करना
दूसरों की सहायता करना
बुद्धिमानी से काम लेना
स्वच्छ रहना
विनीत बनना
ईमानदारी का काम
अपने परिवार के साथ ठीक व्यवहार करना

अभी तक हमने अधिकतर आपके नए जीवन के बारे में बातें की हैं वह किसकी मानिन्द है और उसे किस तरह विस्तृत किया जाए। इस पाठ में हम आपके जीवन के बारे में सोचेंगे और यह

कि वह जीवन आपके बारे में सोचेंगे और यह कि जीवन आपके आस-पास जो लोग हैं उनके लिए क्या करता है।

जगत की ज्योति

बाईबल बतलाती है कि पाप, गल्ती और परमेश्वर के प्रति अज्ञानता यह सब अन्धकार की तरह हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो मसीह के बिना है वह अन्धकार में टटोलता है — वह खोया हुआ शैतान के द्वारा धोखे में पड़ा हुआ और स्वर्ग का मार्ग पाने में आयोग्य है।

परमेश्वर ने अपनी दया में अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार की ज्योति होने के लिए भेज दिया।

> तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" **यूहन्ना 8:12.**

आप का काम

1. स्मरण कीजिए यूहन्ना 8:12.

आप का दीपक

आपका जीवन एक दीपक, एक दीवट या एक ज्योति के बल्ब की तरह है। यीशु की उपस्थिति आप में एक ऐसी लपटों की तरह है, जो दीपक को जलाती है या उस शक्ति की तरह है जो कि बल्ब को चमकने के लिये जलाती है।

मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है। **नीति वचन 20:27।**

आप परमेश्वर का दीपक हैं। यीशु की भलाई और सच्चाई आपके सभी कार्यों के द्वारा चमके।

> तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता ..... उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। **मत्ती 5:14, 16.**

आप का काम

2. आप दूसरों के लिए ज्योति हैं क्योंकि

.....अ) आप सदैव ही एक भले मनुष्य रहे हैं।

.....ब) आप की स्मरण शक्ति बहुत चमकदार है।

.....स) यीशु की उपस्थिति, भलाई, और सच्चाई आप के द्वारा चमकती है।

3. स्मरण कीजिए नीति वचन 20:27

4. स्मरण कीजिए मत्ती 5:14, 16

उत्तर : 2. स) यीशु की उपस्थिति, भलाई, और सच्चाई आप के द्वारा चमकती है।

परमेश्वर ने आपको अन्धियारे में एक दीपक के रूप में रखा है कि आपका जीवन उन लोगों को जो आपके चारों ओर हों उद्धारकर्ता और स्वर्ग का मार्ग दिखलाए। बहुत लोग यह देख रहे हैं कि उस स्वर्ग की शक्ति के बारे में जो आप कहते हैं क्या सच है। आप का

जीवन उन्हें वह सुसमाचार की शक्ति दिखलाता है जो मनुष्य के जीवन को बदल देती है। आप मसीह के लिए एक साक्षी हैं। आप जो कुछ करते हैं वह आप के शब्दों से भी अधिक प्रभु के लिए एक साक्षी हैं।

आप का काम

5. यीशु की शिक्षा के अनुसार जीवन बिताना

.....अ) दूसरों को सुसमाचार की सच्चाई की कापलता के लिए एक सर्वाधिक शक्तिशाली साक्षी है।

.....ब) जब तक अच्छा प्रचार करना पाया जाता है यह एक महत्व ग्रहित बात है कि लोगों को यीशु तक पथ प्रदर्शित किया जाए।

6. क्या आप किसी भी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिस के जीवन से आपको यीशु के पीछे हो लेने की प्रेरणा मिली हों?.....
7. क्या आप प्रभु के लिए एक तीव्र चमकने वाली ज्योति (दीपक) बनना चाहते हैं?.....
8. प्रभु का दीपक होने के नाते क्या आप चाहते हैं कि प्रभु को उस स्थान में ले जाए जहां सबसे अधिक अन्धियारा हो ताकि आप की ज्योति वहां चमक सके?.....
9. प्रार्थना करें कि प्रभु आप का जीवन दिन प्रतिदिन

दूसरों को स्वर्ग का मार्ग दर्शाने के लिए प्रयोग करेगा।

उत्तर : 5. अ) दूसरों को सुसमाचार की सच्चाई की कापलता के लिए एक सर्वाधिक शक्तिशाली साक्षी है।

आइये अब उन कुछ ज्योति की किरणों की ओर देखें जो कि मसीही जीवन से चमक कर दूसरों को सुसमाचार की सच्चाई की कापलता देते हैं।

ईमानदार होना

आपकी ओर अदायगी की रकम को समय पर अदा करना एक अच्छी साक्षी है। एक मसीही को अपने सभी कार्यों में स्पष्ट और ईमानदार होना चाहिये। जो कुछ भी वह उधार लेता है वह उसे समय पर और अच्छी अवस्था में वापस लौटाना चाहिए। उसको आर्थिक परिस्थितियों में नहीं पड़ना चाहिए जिनको वह पूरा न कर सके। उसको अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करना चाहिए।

> इसलिये हर एक का हक्क चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो। किसी के कर्जदार न हो। **रोमियं। 13:7, 8.**
>
> बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली है, उनकी चिन्ता किया करो। **रोमियों 12:17.**

आप का काम

10. न चुकाए हुए कर्जे (ऋण)
.....अ) हमारी साक्षी को दुर्बल बनाते हैं।
.....ब) हमारे परिवर्तन से पूर्व लिए हुए हों तो उन्हें भूला जा सकता है।
उत्तर : 10. अ) हमारी साक्षी को दुर्बल बनाते हैं।

परमेश्वर की सन्तान की मानिन्द बातें करना

यदि आप शाप दें, कसमें खायें अथवा गन्दी कहानियां बतालायें तो लोग परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति के बारे में क्या सोचेंगे? यदि आप झगड़ा करें, गप्पें मारें, दूसरों की आलोचना करें, अपनी ही बड़ाई मारें, झूठ बोलें और गलत भाषा का प्रयोग करें तो क्या आप की ज्योति परमेश्वर के लिए चमकेगी?

दूसरी ओर बहुत से लोगों ने उन लोगों की बदली हुई बातचीत के द्वारा जो मसीही बन जाते हैं सुसमाचार की शक्ति की काबिलता प्राप्त की है।

सब से कठिन बात यदि किसी के लिए भी है तो वह अपनी जीभ को नियन्त्रण में करना है। न केवल जो कुछ आप कहते हैं परन्तु आपके बोलने का ढंग या तो लोगों को मसीह के पास खींच सकता है या उन्हें मसीहियत के विरुद्ध उबार सकता है।

> यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है। **याकूब 1:26.**

आप का काम

11. अपने आप से पूछिए:क्या जिस ढंग से मैं बात करता हूं लोगों को परमेश्वर के प्रेम का आभास दिलाता है ? या मैं लोगों को ठोकर खिलाता हूँ? क्या मैं जिस तरह अब बात करता हूं यदि यीशु को अपनी बगल में देखूं तो क्या मैं सदैव उसी तरह से बात करूंगा ?''

12 यीशु से सहायता मांगिये कि वह आपकी उस तरह से बात करने में सहायता करे जैसे कि परमेश्वर की एक सन्तान को करनी चाहिए।

दूसरों की सहायता करना

यदि हम सचमुच में ''अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम रखते हैं'', तो हम यह अभ्यासिक तौर पर दूसरों की जिस तरह से भी हम कर सकते हैं सहायता करके प्रकट करेंगे।

> हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आपको संसार से निष्कलंक रखें। **याकूब 1:27**

आप का काम

13. क्या आप की कलीसिया में ऐसा कोई निश्चित

साधन आवश्यकता में पड़े हुए लोगों की सहायता करना है, जैसे कि अनाथों और विधवाओं की सहायता?

.....क्या आप इस कार्य में भाग लेते हैं ?.....

14. आप उन लोगों के बारे में जो कि आपके आस पास हों और जिन की समस्यायें और कठिनाईयां हों सोचिये। क्या आप किसी ढंग से सहायता कर सकते हैं ? क्या आप उन्हें दर्शाते हैं कि आप उनकी चिन्ता करते हैं ? आप परमेश्वर से पूछिये कि आप उनके प्रति जिनको आपकी सहायता की आवश्यकता है किस प्रकार एक सच्चा मित्र बन सकते हैं।

बुद्धिमानी से काम करना

सब प्रकार की बुराई से बचे रहो। **1 थिस्सलुनीकियों 5:22**

मूर्खता के कार्य परमेश्वर के लिये मनुष्य के प्रभाव को नष्ट कर डालते हैं। उदाहरणतः भाईचारे की प्रीति मसीहियों में एक बहुत अच्छी बात है परन्तु हमें दूसरों के संग बहुत घुलमिल नहीं जाना चाहिए। जो कुछ आप करते हैं उसे दूसरे लोग किस दृष्टि से देखते हैं ? बुद्धिमानी से काम लीजिये। जो कुछ भी आप करते हैं उसमें एक अच्छा उदाहरण बनिए, और आप का जीवन परमेश्वर के लिये बहुत चमकेगा।

तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए। **रोमियों 14:16**

कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पर पाए; पर वचन और चाल चलन, और प्रेम और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा। **1 तिमुथियुस 4:12**

आप का काम

15. 1 तिमुथियुस 4:12 में पौलुस ने तिमुथियुस को इन बातों में दूसरे विश्वासियों के लिए एक उदाहरण बन जाने के लिए कहा।

.....अ) पहुनाई, संयम, बोलचाल और काम।

.....ब) पवित्र जीवन, दान, प्रचार और आनन्द।

.....स) वचन, चाल चलन, प्रेम, विश्वास, और पवित्रता।

उत्तर : 15. स) वचन, चाल चलन, प्रेम, विश्वास, और पक्त्रिता।

स्वच्छ रहना

एक मसीही तन्दुरुस्ती के नियमों का पालन करने का प्रयत्न करता है, अपने घर में स्वच्छता का एक उदाहरण रखते हुए अपने वस्त्रों और अपने व्यक्तित्व के द्वारा। परन्तु स्वच्छता तो उससे भी परे की बात है। आप की देह परमेश्वर के आत्मा का मंदिर है, इसलिये यह आप को भीतर से और बाहर से स्वच्छ रखनी चाहिए। आपकी देह सड़नी,कमज़ोर या किसी भी गलत या गन्दे काम के द्वारा बीमार नहीं होनी चाहिए। अपनी देह को मजबूत और तन्दुरुस्त रखिए ताकि आप प्रभु के लिये काम कर सकें।

आप का काम

16. (दो चुनिये) स्वच्छ रहना

.....अ) यदि कोई व्यक्ति निर्धन है तो यह महत्वपूर्ण नहीं है।

.....ब) व्यकित की सेहत पर असर डालता है।

.....स) जो साक्षी हम देते हैं उस पर प्रभाव डालता है।

उत्तर : ब) व्यकित की सेहत पर असर डालता है।
स) जो साक्षी हम देते हैं उस पर प्रभाव डालता है।

यह तो एक जाना माना तथ्य है कि सिगेरट पीना फेफड़ों के कैंसर का एक मुख्य कारण है और इससे बहुत मृत्यु होती हैं। शराब पीने, और नशीली दवाओं के प्रयोग से भी हज़ारों ही प्रति वर्ष मरते हैं। हमें आत्महत्या कदापि नहीं करनी चाहिए, न तो एकदम और न ही धीरे-धीरे क्योंकि इस से तो "परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करना होगा।"

> क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है ? यदि कोई परमेश्वर का मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा, क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो। **1 कुरिन्थियों 3:16, 17**

आप का काम

17. हम शराबीपन, नशीली दवाओं के उपयोग, तम्बाकू का उपयोग और मदिरा की सी वस्तुओं के उपयोग का विरोध करते हैं क्योंकि

.....अ) इन बुरी आदतों और खर्चीली महंगी आदतों में धन नष्ट होता है।

.....ब) यह चीजें उस देह को नुक्सान पहुंचाती हैं जो पवित्र आत्मा का मन्दिर है।

उत्तर : 17. ब) यह चीजें उस देह को नुक्सान पहुंचाती हैं जो पवित्र आत्मा का मन्दिर है।

बाईबल शराबीपन को मना करती है

दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। **इफिसियों 5:18**

क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ? धोखा न खाओ न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़ न गाली देने वाले, न अन्धेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे। **कुरिन्थियों 6:9-11**

यदि आप के जीवन में इन में से किसी भी वस्तु में समस्या पाई जाती है तो अपने पास्टर के बात कीजिये। पास्टर और कलीसिया से प्रार्थना करने को कहिए कि आप इस विषय में पूर्ण विजय प्राप्त कर सकें। आप का परिवर्तित जीवन उनके लिये एक साक्षी होगा जिन्हें आप पाप और इन बुराइयों की जंजीरों से मुक्त हुआ देखना चाहते हैं।

आप का काम

18. यदि एक मसीही को अपनी बुरी आदतों से छुटकारा प्राप्त करने में कठिनाई हो रही हो तो उसे चाहिए

.....अ) कलीसिया में जाना छोड़ दे।

.....ब) गुप्त रूप में अपनी बुरी आदतों को लागू रखे।

.....स) पास्टर और कलीसिया को अपने लिये प्रार्थना करने को कहें।

उत्तर : 18. स) पास्टर और कलीसिया को अपने लिये प्रार्थना करने को कहें।

विनीत होना

हमें अपने वचन, कामों और दिखावे में विनीत होना चाहिए। विनीतता (नम्रता) घमंड और खालीपन के विपरीत है। यदि हम दूसरों से अपने आप को बेहतर करके दिखलाएं और दूसरों को तुच्छ जानें जो ऐसे काम करते हैं जिन्हें हम न करेंगे, ऐसा करने से हम उन्हें मसीहियत से दूर कर देंगे इसकी अपेक्षा कि हम उन्हें प्रभु के लिये जीत लें।

हमें यह बात निश्चय ही जान लेनी चाहिए कि हमारे पास जो कुछ भी है, हम क्या कुछ है, या हम क्या हैं इसके ऊपर हमें तनिक भी गर्व करने का अधिकार नहीं है। हमें जो कुछ परमेश्वर ने दिया है और जो कुछ भी उसने हमारे लिये किया है हम उस पर ज़रा भी अधिकार नहीं रखते। इस बात का स्मरण रखें कि यदि उसकी दया न होती और उसका काम हमारे जीवन में न होता तो हम कितने अभागे, और पापी होते जिसे संसार ने जाना होता।

एक बेकार, घमंडी व्यक्ति चाहता है कि प्रत्येक उसकी ओर ध्यान दे। वह दूसरों का अपनी ओर ध्यान, फैशन, महंगे वस्त्र और आभूषणों के द्वारा या अपने उत्तम ज्ञान और योग्यता के द्वारा खींच सकता है। हो सकता है कि वह अपनी ओर लोगों का ध्यान कपड़े पहनने के आम रीति रिवाज और व्यवहार के विरुद्ध चलकर खींचे। एक घमंडी व्यक्ति अपने आध्यात्मिक अनुभव और प्रभु के प्रति अर्पण किये जाने का भी घमंड करे। एक विनीत व्यक्ति ऐसा नहीं होता। वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयत्न नहीं करता।

एक विनीत मसीही उन तौर तरीकों से जो एक ही तरफ ले जाते हैं, घटनायें या जो परमेश्वर की सन्तानों के लिये बुरा स्वाद रखने वाली हों उनसे वह अपने आप को बचाता है।

बाईबल के बहुत सारे भाग (उद्धरण) मुख्य रूप से स्तिरयोंको विनीत बनने के लिये प्रोत्साहित तथा झूठेपन के विरुद्ध चुनौती देते हैं। स्त्रियाँ सुन्दर बनना चाहती हैं। यह बात तो उनके लिये स्वाभाविक ही है। परमेश्वर सुन्दरता के विरुद्ध नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि वह चाहता है सभी मसीही सुन्दर हों। भजन संहिता 149:4 में वह "लोगों का उद्धार कर के उन्हें नम्र शोभायमान (सुन्दर) बनाएगा" यह प्रतिज्ञा उसने की है। परमेश्वर चाहता है कि हमारी सुन्दरता भीतर से आये—एक सुन्दर चरित्र से जो कि एक सुहावने और प्रसन्न चेहरे पर से चमकता है आए। वह बतालाता है कि सुन्दरता के लिये सर्वोत्तम सामग्री हम प्रयोग कर सकते हैं एक सभ्य और शान्त आत्मा।

> तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। **1 पतरस 3:4**

आपका काम

19. विनीतता

.....अ) एक मसीही गुण है।

.....ब) हीन भावना का एक चिन्ह है।

.....स) झूठेपन (खालीपन) की एक किस्म है।

उत्तर : 19. अ) एक मसीही गुण है।

ईमानदार कार्य

हमें अपनी जीविका ईमानदारी के काम से कमानी है और ऐसा नहीं होने देना कि पैसे का प्रेम हमें ऐसे कामों में ले जाए जैसा कि जुआ, लॉटरी, शर्त रखना, और कोई भी ऐसा खेल जिस में किस्मत की बात पाई जाए। और यह तो ठीक है कि हम कुछ भी ऐसा बनाना या बेचना नहीं चाहते जिस से कि दूसरों को हानि हो।

> क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। **1 तिमुथियूस 6:10**

परमेश्वर हमें सुस्त नहीं परन्तु अच्छे कार्यकर्ता बनाना चाहता है। मसीही जिन्होंने अपना काम भली भांति कर लिया है बिना शिकायत किये अपने स्वामी को इस बात के लिये मजबूर कर दिया है कि सुसमाचार में शक्ति पाई जाती है।

> यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए। **2 थिस्सलुनिकियों 3:10**
>
> और जैसी हमने तुम्हें आज्ञा दी, वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना काम काज करने, और अपने-अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो। कि बाहर वालों के साथ सभ्यता से बर्ताव करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो। **1 थिस्सलुनिकियों 4:11, 12**

आप का काम

20. बाईबल सिखलाती है कि यदि एक व्यक्ति काम न करना चाहे तो

.....अ) उसे मालिक बन जाना चाहिए।

.....ब) वह खाने भी न पाए।

21. अच्छा, भरोसेजनक काम है

.....अ) आप की साक्षी में एक रुकावट।

.....ब) आप की ज्योति के चमकने के लिये एक अच्छा मार्ग।

.....स) बिना महत्व के

उत्तर : 20. ब) वह खाने भी न पाए। 21. ब) आप की ज्योति के चमकने के लिये एक अच्छा मार्ग।

अपने परिवार से ठीक पेश आना

आप इसके बारे में अगले अध्याय में अध्ययन करेंगे, परन्तु आप की साक्षी का विषय बिना यह बतालाये कि आप के घर का जीवन का प्रभाव, छोड़ देना असम्भव है। बहुतों ने अपनी दिलचस्पी सुसमाचार में खो दी है उन झगडों के कारण जो कि मसीही कहलाने वाले लोगों के घरों में होते हैं। दूसरी और जिनकी सुसमाचार में बहुत ही कम दिलचस्पी पाई जाती है उनके द्वारा मसीही घर में धीरज, प्रेम, और प्रभु के आनन्द को देख कर वे मसीह के लिये जीत लिये गए हैं।

आप का काम

22. पीछे मुड़कर उन ढंगों की ओर पुनःदेखिए जिनके द्वारा आप अपनी ज्योति चमकने दे सकते हैं और प्रभु से उनमें से प्रत्येक ढंग के लिये सहायता मांगिए।